बाज़ार दर्शन

—जैनेंद्र कुमार

लेखक परिचय

जीवन परिचय—प्रसिद्ध उपन्यासकार जैनेंद्र कुमार का जन्म 1905 ई० में अलीगढ़ में हुआ था। बचपन में ही इनके पिता जी का देहांत हो गया तथा इनके मामा ने ही इनका पालन-पोषण किया। इनकी प्रारंभिक शिक्षा-दीक्षा हस्तिनापुर के गुरुकुल में हुई। इन्होंने उच्च शिक्षा काशी हिंदू विश्वविद्यालय, बनारस में ग्रहण की। 1921 ई० में गांधी जी के प्रभाव के कारण इन्होंने पढ़ाई छोड़कर असहयोग आंदोलन में भाग लिया। अंत में ये स्वतंत्र रूप से लिखने लगे।

इनकी साहित्य-सेवा के कारण 1984 ई० में इन्हें 'भारत-भारती' सम्मान मिला। भारत सरकार ने इन्हें पद्मभूषण से सम्मानित किया। इन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार भी प्राप्त हुआ। इनका देहांत सन 1990 में दिल्ली में हुआ।

रचनाएँ—इनकी रचनाएँ निम्नलिखित हैं—

उपन्यास—परख, अनाम स्वामी, सुनीता, त्यागपत्र, कल्याणी, जयवर्द्धन, मुक्तिबोध।

कहानी-संग्रह—वातायन, एक रात, दो चिड़ियाँ, फाँसी, नीलम देश की राजकन्या, पाज़ेब।

निबंध-संग्रह—प्रस्तुत प्रश्न, जड़ की बात, पूर्वोदय, साहित्य का श्रेय और प्रेय, सोच-विचार, समय और हम।

साहित्यिक विशेषताएँ—हिंदी कथा साहित्य में प्रेमचंद के बाद सबसे महत्त्वपूर्ण कथाकार के रूप में जैनेंद्र कुमार प्रतिष्ठित हुए। इन्होंने अपने उपन्यासों व कहानियों के माध्यम से हिंदी में एक सशक्त मनोवैज्ञानिक कथा-धारा का प्रवर्तन किया।

जैनेंद्र की पहचान अत्यंत गंभीर चिंतक के रूप में रही। इन्होंने सरल व अनौपचारिक शैली में समाज, राजनीति, अर्थनीति एवं दर्शन से संबंधित गहन प्रश्नों को सुलझाने की कोशिश की है। ये गांधीवादी विचारधारा से प्रभावित थे। इन्होंने गांधीवादी चिंतन दृष्टि का सरल व सहज उपयोग जीवन-जगत से जुड़े प्रश्नों के संदर्भ में किया है। ऐसा उपयोग अन्यत्र दुर्लभ है। इन्होंने गांधीवादी सिद्धांतों—जैसे सत्य, अहिंसा, आत्मसमर्पण आदि—को अपनी रचनाओं में मुखर रूप से अभिव्यक्त किया है।

भाषा-शैली—जैनेंद्र जी की भाषा-शैली अत्यंत सरल, सहज व भावानुकूल है जिसमें तत्सम शब्दों का प्रयोग बहुलता से हुआ है परंतु तद्भव और उर्दू-फ़ारसी भाषा के शब्दों का प्रयोग अत्यंत सहजता से हुआ है।

Scanned with CamScanner

❖ पाठ का सारांश

एक बार लेखक का एक मित्र कुछ सामान्य वस्तु लेने बाजार गया। मित्र के साथ उसकी पत्नी भी थी परन्तु जब वह बाजार से लौटे तो उनके पास बहुत सारा सामान था, जिसे देखकर लेखक ने चौंक कर पूछा कि यह क्या है, मित्र ने कहा यह सब पत्नी लाई हैं। वास्तव में पैसे वाले लोग दूसरों को दिखाने के लिए सामान लाते हैं और दोष पत्नी को देते हैं क्योंकि यदि पैसा हमारे बैंक में जमा है तो उसे कोई नहीं देख सकता परन्तु सामान और भौतिक संसाधन देखकर ही लोग अमीर और गरीब की पहचान करते हैं।

परन्तु बुद्धिमान लोग पैसे को संयमित ढँग से खर्च करते हैं वह फिजूल खर्ची नहीं करते। उनका मन गर्व से फूला रहता है परन्तु लेखक के मित्र ने सामान अपने पैसे के आधार पर खरीद अपनी आवश्यकता के आधार पर नहीं। जब लेखक ने कहा कि यह नाहक लाए तो उन्होंने कहा कि "बाजार शैतान का जाल है ऐसा सजाकर रखा कि यदि बेहया ही हो जो न फँसे" लेखक ने मन में कहा कि बाजार कहता है कि आओ मुझे लूट लो क्योंकि चौक बाजार में आदमी को लगता है कि मोरे पास सामान बहुत कम है।

लेखक के दूसरे मित्र दोपहर को बाजार गए और शाम तक लौटकर आए परन्तु वह अपने साथ कुछ भी सामान नहीं लाए। जब लेखक ने पूछा कि खाली हाथ कैसे आए तो उन्होंने कहा, "सब कुछ लेने का मन होता था कुछ लेने का मतलब था—शेष छोड़ना। मैं कुछ भी छोड़ना नहीं चाहता था इसलिए कुछ भी नहीं लाया। बाजार में एक जादू होता है मन सभी को लेने की इच्छा करता है परन्तु इस जादू से बचने का उपाय है कि जब बाजार जाओ तो मन खाली न हो। जिस प्रकार पानी पीने से लू नहीं लगती। मन लक्ष्य से भरा हो तो बाजार फैला का फैला रह जाएगा। अगर हमें ठीक पता नहीं है कि बाजार से क्या चाहिए तो सब ओर की चाह घेर लेगी, जिसका परिणाम त्रास होगा।

मन खाली नहीं रहना चाहिए। इसका मतलब यह नहीं कि मन बंद रहना चाहिए। बन्द होने का अर्थ शून्य है, शून्य का अधिकार परमात्मा को हो जो सनातन भाव से संपूर्ण है शेष सब अपूर्ण है। इसलिए मन बंद नहीं रह सकता, इसलिए बाजार जाते समय हमें मन के लक्ष्य को तय कर जाना चाहिए मनमानेपन की छूट मन को नहीं होनी चाहिए क्योंकि वह स्वयं पूर्ण नहीं है।

लेखक के पड़ोंस में रहने वाले व्यक्ति भगत जी हैं। वह चूरन बेचने का काम बहुत लम्बे समय से कर रहे हैं। एक दिन में वह छ; आने का चूरन बेचते हैं, बचा हुआ चूरन बच्चों में बाँट देते हैं। उनका चूरन अच्छा है। लोग उनकी प्रतीक्षा करते रहते है कि कब वह चुरन बेचने निकलें। भगत जी की ख्याति हैं परन्तु चूरन को वह न तो थोक में बेचते हैं न व्यापारियों को देते हैं। यदि वह ऐसा करते तो पैसे वाले होते परन्तु वह ऐसा नहीं करते। नियमित चूरन बेचते हैं न कभी लापरवाही करते हैं और न कभी बीमार पड़ते हैं। भगत जी पर बाजार का जादू भी नहीं चलता।

लेखक चूरन वाले को श्रेष्ठ मानता है क्योंकि वह बिना पढ़ा—लिखा है, पढ़े—लिखे लोग बहुत बातें जानते हैं परन्तु उस अनपढ़ को "वह सब प्राप्त है जो हम में से बहुत कम को शायद प्राप्त है,

Scanned with CamScanner

उस पर बाजार का जादू नहीं चलता। माल बिछा रहता है परन्तु उसका मन अडिग है पैसा उसके पीछे घूमता है परन्तु वह छैः आने से अधिक नहीं कमाता।

मेरे सामने मोटर पर बैठा हुआ व्यक्ति निकला। मैं पैदल चल रहा था मेरे मन ने सोचा मैंने क्यों ऐसे माँ–बाप के यहाँ जन्म लिया जो पैदल चलना पड़ रहा है। काश मैं भी मोटर वालों के यहाँ जन्म लेता। परन्तु चूरन वाले के सामने यह भावना चूर–चूर हो जाती है – "संचय की तृष्णा और वैभव की चाह में व्यक्ति की निर्बलता प्रमाणित होती है। निर्बल ही धन की ओर झुकता है वह उबलता है। वह मनुष्य पर धन की और चेतन पर जड़ की विजय है।"

एक बार चूरन वाले भगत जी चौक बाजार में दिखे। उन्होंने जयराम किया, मैंने भी जयराम कर उत्तर दिया। चौक बाजार सामान एवं फैन्सी आइटमों से भरा पड़ा था। भगत जी को अनेकों पहचानने वालों ने अभिवादन किया। वह चौक बाजार के सारे सामान देखकर प्रसन्न होते थे परन्तु वह चौक बाजार में कहीं नहीं रुके, सीधे पंसारी की दुकान पर पहुँचे वहाँ से उन्हें जीरा आदि जो उपयोगी वस्तुएँ चाहिए थीं, खरीदीं। चौक बाजार की उपयोगिता उनके लिए तब तक है जब तक उन्हें पंसारी की दुकान से सामान खरीदना है। इसके आगे यदि चौक बाजार के आस–पास चाँदनी बिछी है तो बड़ी खुशी से बिछी रहे, भगत जी से बेचारी का कल्याण ही चाहते हैं।

लेखक को ज्ञात हुआ कि बाजार को सार्थकता भी वही मनुष्य देता है जो यह जानता है कि उसे क्या चाहिए। 'पर्चेजिंग पावर' पैसे से लोग केवल विनाश की वस्तुएँ लेते हैं बल्कि बाजार से लाभ नहीं उठा पाते। इसीलिए बाजार में छल कपट विद्यमान है ग्राहक और बेचने वाले एक दूसरे को ठगना चाहते हैं। एक की हानि में दूसरे को लाभ दिखता है। बाजार में आवश्यकताओं का आदान–प्रदान नहीं होता केवल शोषण होता है। तब कपट सफल होता है निष्कपट शिकार होते हैं। ऐसे बाजार मनुष्य के लिए विडम्बना हैं ऐसे बाजार का जो पोषण करते हैं ऐसा बना हुआ शास्त्र, अर्थशास्त्र सरासर औंधा है, वह मायावी शास्त्र है, वह अर्थशास्त्र अनीतिशास्त्र है।

Scanned with CamScanner

प्रश्न 1. बाजार का जादू चढ़ने और उतरने पर मनुष्य पर क्या–क्या असर पड़ता है ?

उत्तर : बाजार में एक जादू है, वह जादू आँख के द्वारा काम करता है। वह रूप का जादू है जैसे चुम्बक का जादू लोहे पर चलता है ठीक उसी प्रकार बाजार का जादू जब जेब भरी हो, और मन खाली हो, ऐसी हालत में जादू का असर खूब होता है जेब खाली पर मन भरा न हो तो भी जादू चल जाएगा। सभी सामान जरूरी और आराम को बढ़ाने वाला मालूम होता है। जब बाजार का जादू उतरता है तब पता चलता है कि फैंसी चीजों की बहुतायत आराम में मदद नहीं देती बल्कि खलल ही डालती है थोड़ी देर के लिए स्वाभिमान को जरूर सैक मिल जाता है पर इससे स्वाभिमान की गिल्टी की और खुराक ही मिलती है। जकड़ रेशमी डोरी की हो तो रेशम के स्पर्श के मुलायम होने के कारण क्या वह कम जकड़ होगी।

Scanned with CamScanner

2. *बाज़ार में भगत जी के व्यक्तित्व का कौन-सा सशक्त पहलू उभरकर आता है? क्या आपकी नज़र में उनका आचरण समाज में शांति-स्थापित करने में मददगार हो सकता है?* [*CBSE (Outside), 2008*]

उत्तर बाज़ार में भगत जी के व्यक्तित्व का यह सशक्त पहलू उभरकर आता है कि उनका अपने मन पर पूर्ण नियंत्रण है। वे चौक-बाज़ार में आँखें खोलकर चलते हैं। बाज़ार की चकाचौंध उन्हें भौचक्का नहीं करती। उनका मन भरा हुआ होता है, अत: बाज़ार का जादू उन्हें बाँध नहीं पाता। उनका मन अनावश्यक वस्तुओं के लिए विद्रोह नहीं करता। उनकी ज़रूरत निश्चित है। उन्हें जीरा व काला नमक खरीदना होता है। वे केवल पंसारी की दुकान पर रुककर अपना सामान खरीदते हैं। ऐसे व्यक्ति बाज़ार को सार्थकता प्रदान करते हैं।

ऐसे व्यक्ति समाज में शांति स्थापित करने में मददगार हो सकते हैं क्योंकि इनकी जीवनचर्या संतुलित होती है।

Scanned with CamScanner

1. *'बाज़ार दर्शन' पाठ में बाज़ार जाने या न जाने के संदर्भ में मन की कई स्थितियों का ज़िक्र आया है। आप इन स्थितियों से जुड़े अपने अनुभवों का वर्णन कीजिए।*

(क) *मन खाली हो* (ख) *मन खाली न हो* (ग) *मन बंद हो* (घ) *मन में नकार हो*

उत्तर (क) **मन खाली हो**—जब मनुष्य का मन खाली होता है तो बाज़ार में अनाप-शनाप खरीददारी की जाती है। बाज़ार का जादू सिर चढ़कर बोलता है। एक बार मैं मेले में घूमने गया। वहाँ चमक-दमक, आकर्षक वस्तुएँ मुझे न्योता देती प्रतीत हो रही थीं। रंग-बिरंगी लाइटों से प्रभावित होकर मैं एक महँगी ड्रेस खरीद लाया। लाने के बाद पता चला कि यह आधी कीमत में फुटपाथ पर मिलती है।

(ख) **मन खाली न हो**—मन खाली न होने पर मनुष्य अपनी इच्छित चीज़ खरीदता है। उसका ध्यान अन्य वस्तुओं पर नहीं जाता। मैं घर में ज़रूरी सामान की लिस्ट बनाकर बाज़ार जाता हूँ और सिर्फ़ उन्हें ही खरीदकर लाता हूँ। मैं अन्य चीज़ों को देखता ज़रूर हूँ, पर खरीददारी वही करता हूँ जिसकी मुझे ज़रूरत होती है।

Scanned with CamScanner

(ग) **मन बंद हो**—मन बंद होने पर इच्छाएँ समाप्त हो जाती हैं। वैसे तो इच्छाएँ कभी समाप्त नहीं होतीं, परंतु कभी-कभी मन:स्थिति ऐसी होती है कि किसी वस्तु में मन नहीं लगता। एक दिन मैं उदास था और मुझे बाज़ार में किसी वस्तु में कोई दिलचस्पी नहीं थी। अत: मैं बिना कहीं रुके बाज़ार से निकल आया।

(घ) **मन में नकार हो**—मन में नकारात्मक भाव होने से बाज़ार की हर वस्तु खराब दिखाई देने लगती है। इससे समाज का विकास रुक जाता है। ऐसा असर किसी के उपदेश या सिद्धांत का पालन करने से होता है। एक दिन एक साम्यवादी ने इस तरह का पाठ पढ़ाया कि बड़ी कंपनियों की वस्तुएँ मुझे शोषण का रूप दिखाई देने लगीं।

2. *'बाज़ार दर्शन' पाठ में किस प्रकार के ग्राहकों की बात हुई है? आप स्वयं को किस श्रेणी का ग्राहक मानते/मानती हैं?*

उत्तर 'बाज़ार दर्शन' पाठ में कई प्रकार के ग्राहकों की बातें हुई हैं जो निम्नलिखित है—

(*i*) पर्चेज़िंग पावर का प्रदर्शन करने वाले ग्राहक। (*ii*) खाली मन व भरी ज़ेब वाले ग्राहक।

(*iii*) खाली मन व खाली ज़ेब वाले ग्राहक। (*iv*) भरे मन वाले ग्राहक।

(*v*) मितव्ययी व संयमी ग्राहक। (*vi*) अपव्ययी व असंयमी ग्राहक।

(*vii*) बाज़ार का बाज़ारूपन बढ़ाने वाले ग्राहक।

मैं स्वयं को भरे मन वाला ग्राहक समझता हूँ क्योंकि मैं वे ही वस्तुएँ बाज़ार से खरीदकर लाता हूँ जिनकी मुझे ज़रूरत होती है।

Scanned with CamScanner

स्वयं करें

1. ऊँचे बाज़ार के आमंत्रण को मूक क्यों कहा गया है ?
2. बाज़ार के जादू को क्या कहा गया है ? आपके विचार से यह कितना सही है ? 'बाज़ार दर्शन' पाठ के आधार पर उत्तर
3. 'मन खाली होने' तथा 'मन बंद होने' के क्या आशय हैं ? यह भी बताइए कि इनमें क्या अंतर है ?
4. पैसे की व्यंग्य शक्ति उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।
5. क्या बाज़ार का जादू सभी पर चल सकता है ? भगत जी के उदाहरण के माध्यम से स्पष्ट कीजिए।
6. भगत जी का व्यवहार हमारे लिए क्या सीख छोड़ जाता है ?
7. क्या 'मनुष्य पर धन की विजय' को 'चेतन पर जड़ की विजय' कहा जा सकता है? स्पष्ट कीजिए।

Scanned with CamScanner

4. *भगत जी बाज़ार को सार्थक व समाज को शांत कैसे कर रहे हैं? 'बाज़ार दर्शन' पाठ के आधार पर बताइए।*

[CBSE Sample Paper, 2008]

उत्तर भगत जी निम्नलिखित तरीके से बाज़ार को सार्थक व समाज को शांत कर रहे हैं–

(*i*) वे निश्चित समय पर चूरन बेचने के लिए निकलते हैं।

(*ii*) छह आने की कमाई होते ही बचे चूरन को बच्चों में मुफ़्त बाँट देते हैं।

(*iii*) बाज़ार में जीरा व नमक खरीदते हैं।

(*iv*) सभी का अभिवादन करते हैं।

(*v*) बाज़ार के आकर्षण से दूर रहते हैं।

(*vi*) अपने चूर्ण का व्यावसायिक तौर पर उत्पादन नहीं करते।

Scanned with CamScanner